चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	6-12-23	4	2-7

हरियाणा कृषि विवि के **अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी** में आइसीएआर में मक्का विभाग के पूर्व डायरेक्टर ने मक्का उपज बढ़ाने पर दिया जोर

जलस्तर में होगा सुधार, प्रदूषण भी होगा नियंत्रित

जलवायु परिवर्तन से लेकर संरक्षित कृषि पर हुए व्याख्यान

जागरण संवाददाता, हिसार : उत्तर भारत मक्का की फसल के लिए अग्रणी था। मगर धीरे-धीरे मक्का की फसल की जगह धान ने ले ली। हरियाणा के अलावा पंजब में धान ज्यादा उगाई जाने लगी। उसका नुकसान यह हुआ है जमीन का पानी आज के समय में काफी नीचे चला गया है। साथ ही धान की कटाई के बाद जलाई जाने वाली पराली से प्रदूषण का स्तर भी बढ़ गया है। उत्तर भारत में जमीन में पानी का स्तर सही हो और प्रदूषण न हो इसको लेकर मक्का की फसल को दोबारा से उगाने के लिए जोर दिया गया है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में आइसीएआर के मक्का में पूर्व डायरेक्टर डा. सैन दास ने अपने पेपर के माध्यम से इस उपज को बढ़ाने पर जोर दिया।

डा. सैन दास ने बताया कि हरियाणा बनने के बाद धान पर किसानों की तरफ से जोर दिया जाने लगा। उससे पहले पंजाब, हरियाणा सहित उत्तर भारत के राज्यों में मक्का की फसल होती थी, लेकिन धीरे-धीरे वह सिमट कर रह गई। हरियाणा व आस पास राज्य में बारिश 500 से 700 मिली मीटर तक होने के कारण जमीन से किसानों ने पानी का दोहन किया और उसका स्तर काफी नीचे चला गया। साथ ही धान की कटाई के बाद अब उसकी पराली को जलाया जा रहा है जिससे प्रदूषण भी काफी ज्यादा हो रहा है। यदि मक्का को उगाया जाता है तो दोनों नुकसान से बचा का सकता है। उन्होंने कहा कि धान की फसल उस राज्य की है जहां 1200 मिली मीटर तक वर्षा होती है। कारण है इस फसल के लिए पानी काफी ज्यादा चाहिए।

कम समय में तैयार हो जाता है मक्का :

डा. सैन दास ने बताया कि मक्का की फसल पक्क कर करीब 100 दिन में किसान को मिल जाएगी। धान को तैयार होने में 120 से 130 दिन का समय लगता है। इसके अलावा धान के लिए पानी काफी ज्यादा चाहिए और मक्का के लिए नहीं। यदि किसान मक्का उगाता है तो 70 प्रतिशत पानी और 90 प्रतिशत तक बिजली की खपत की बचत होगी।

हरियाणा सरकार दे रही बढ़ावा

हरियाणा सरकार की तरफ से धान की बजाए दूसरी फसल को उगाने पर किसान को सात हजार रुपये देने का निर्णय किया हुआ है। वह काफी किसानों को दे रही है। डा. सैन दास ने बताया कि यह सरकार का बेहतर कदम है और काफी किसान धान को छोड़ कर दूसरी फसल पर गए है।

धान के बराबर मक्का की पैदावार

मक्का की पैदावार धान के बराबर है। अभी धान को सरकार की तरफ से खरीदा भी जाता है तो किसान को उगाता है। इसके अलावा मक्का में प्रोटीन और न्यूट्रिशन भी ज्यादा है। यदि मक्का उगाया जाता है तो उसकी मांग भारत ही नहीं अपितु दूसरे देशों में भी काफी ज्यादा है। मक्का को देखे तो देश में मध्य प्रदेश और कर्नाटक में सबसे ज्यादा उगाया जाता है। मक्का प्रोडक्शन का 15 प्रतिशत ही इन दो राज्यों में होता है। इसके अलावा मक्का को औद्योगिक घराने खरीदते हैं। डा. सैन दास ने बताया कि अमेरिका में धान के मुकाबले मक्का का ज्यादा उगाया जाता है।

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती आदि विषय पर व्याख्यान दिए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा। इसमें जर्मनी से डा. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डा. फ्रांसिस्को फगिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में माडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डा. मैक्सवेल मर्कोडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

सह-चेयरमैन जापान से डा. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आइपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया।

सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डा. बीके शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डा. परविंद श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डा. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताई। इसमें डा. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई।

हकृवि में आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिक। ● जागरण।

जलवायु परिवर्तन व पशुधन उत्पादन : प्रभाव और अनुकूलन रणनितियां विषय पर दिया व्याख्यान

डा. सुरेंद्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डा. गुरुदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए। पांचवे सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलैंड से डा. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अदा की। कजाखस्तान से डा. विक्टर कामकिन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्त्र के डा. होसम रूशदी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन : प्रभाव और अनुकूलन रणनितियां' विषय पर व्याख्यान दिया। वहीं, रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व अन्य ● जागरण।

हरियाणवी डांस की प्रस्तुति देते कलाकार। ● जागरण।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6.12.23	2	3-6

मंथन • हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

ग्लोबल वार्मिंग से पिघल रहे ग्लेशियर, भारत समेत कई देशों में मीठे पानी पर भी संकट

यशपाल सिंह | हिसार

आर्कटिक और अंटार्कटिका के भाग वैश्विक औसत की तुलना में बहुत तेजी से गर्म हो रहे हैं। यहां बर्फ की मात्रा तेजी से घट रही है। 21वीं सदी के मध्य तक आर्कटिक में गर्मियों के समय में समुद्री बर्फ के पूरी तरह से नष्ट होने का अनुमान है। इससे अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड, भारत के हिमालयन समेत दुनिया के ग्लेशियर पिघलने से कई देशों में मीठे पानी की समस्या हो सकती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने आए जर्मनी के ओस्नाब्रुक यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज के प्रोफेसर डॉ. डिटर एच. ट्रॉटज ने यह बातें सांझा कीं। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के वैश्विक और क्षेत्रीय पहलू पर शोध किया है।

हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में तूफान का बदल रहा पैटर्न

हिसार | सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

दुनिया भर में छह प्रमुख क्षेत्रों में तूफान आते हैं। ये क्षेत्र हैं उत्तर अटलांटिक, उत्तरपूर्वी प्रशांत, उत्तर-पश्चिमी प्रशांत, दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत और उत्तर और दक्षिण हिंद महासागर। प्रत्येक क्षेत्र ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले तूफान के पैटर्न में बदलाव हो रहा है। समुद्र की सतह का तापमान गर्म होने पर उनकी हवाएं और अधिक तीव्र हो जाती हैं।

अल नीनो व ला नीनो का हो सकता है प्रभाव

भारत में अल नीनो और ला नीनो की घटनाओं और मौसमी मानसून जैसे चक्र जलवायु के गर्म होने पर बदल सकते हैं। अल नीनो व ला नीना प्रशांत महासागर और आसपास के क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं, लेकिन वैज्ञानिक पता लगा रहे हैं कि इनका प्रभाव दुनिया के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है।

समुद्रों का बढ़ रहा स्तर, छोटे द्वीपों पर खतरा

समुद्र के बढ़ते स्तर का दुनियाभर के तटीय क्षेत्रों और द्वीपों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है। बांग्लादेश और नीदरलैंड के देशों में बड़े क्षेत्र, अमेरिकी राज्य फ्लोरिडा व न्यू ऑरलीन शहर समुद्र तल से थोड़ा ही ऊपर है। यहां समुद्र स्तर में थोड़ी सी भी वृद्धि होने का बड़ा खतरा है।

दक्षिण अफ्रीका में 75 से 250 मिलियन लोगों के सूखे और पीने के पानी की कमी की चपेट में आने का अनुमान है। आने वाले समय में भोजन का संकट भी वैश्विक आबादी के समक्ष खड़ा हो सकता है। भारत सहित एशिया के कुछ क्षेत्रों में स्वच्छ मीठे पानी की कमी होने का अनुमान है। उत्तरी भारत को भी हिमालयन ग्लेशियर से पानी मिलता है। यहां भी संकट पैदा हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों और अंटार्कटिका जैसे द्वीपों में रहने वाले जीव-जंतुओं की कुछ प्रजातियों के भी समाप्त होने का खतरा बना है। प्रशांत महासागर के आसपास के छोटे द्वीप विश्व के मानचित्र से मिट जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	6-12-23	2	3-7

कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा और जोत प्रबंधन करना बेहद जरूरी

एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े शोध पत्र किए प्रस्तुत

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिकों ने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच त्रुटज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर विचार रखे। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन और बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मौजूद शोध संस्थानों से आए वैज्ञानिक। संवाद

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के तहत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी रिडेकर ने अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. बीके शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रो. सर्जिओ सी कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताईं, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाइड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए।

पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्र के डॉ. होसम रूशदी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादनः प्रभाव और अनुकूलन रणनितियां' विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया।

कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्त्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया।

नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रो. यो तोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपने व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि' भूमि	6-12-23	9	2-6

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सम्मेलन का दूसरा दिन

वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा पर पेश किए शोधपत्र

- देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक
- ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। मंच पर मौजूद देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

मशीनीकरण आधारित कृषि पर रणनीतियां बताईं

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताईं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6.12.23	1	1-5

भास्कर खास • एचएयू के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जापान के होक्काइडो विवि के प्रोफेसर डॉ. यो टोमा ने सांझा किया शोध

गाय-भैंस के गोबर से निकलती सीएच-4 व एन 2 ओ गैस बढ़ा रही ग्रीन हाउस गैसें, चराई का तरीका बदल कम कर सकते हैं इनका उत्सर्जन

भास्कर न्यूज | हिसार

ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन को कम करना अब विश्वव्यापी मुद्दा बन गया है। पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन में पशुओं को भी महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। पशुधन वर्ग में सीएच-4 और एन 2 ओ उत्सर्जन को कम करना आवश्यक है।

प्रोफेसर डॉ. यो टोमा।

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल क्रियाओं द्वारा सीएच-4 उत्सर्जन और गोबर और मूत्र से सीएच-4 और एन 2 ओ का उत्सर्जन होता है। एचएयू में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे जापान के होक्काइडो विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान संकाय में मृदा विज्ञान प्रयोगशाला के प्रोफेसर डॉ. यो टोमा ने कही। वे जापानी सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस एंड प्लांट न्यूट्रिशन के निदेशक हैं।

पशु के गोबर और मूत्र से उनके उत्सर्जन कारकों का किया अध्ययन

उन्होंने बताया कि जापान में किए हालिया अध्ययन से पाया कि पशु की चराई प्रणाली को बदलने से पशुधन वर्ग में जीएचजी उत्सर्जन में संभावित रूप से कमी आती है। हालांकि, चराई द्वारा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का अनुमान लगाने में बड़ी अनिश्चितताएं हैं। हमने सीएच 4 और एन 2 ओ उत्सर्जन और पशु के गोबर और मूत्र से उनके उत्सर्जन कारकों का अध्ययन किया। इसके अलावा, मानवरहित हवाई वाहन यूएवी द्वारा ली गई तस्वीरों और गहन शिक्षण मॉडल के साथ ऑब्जेक्ट डिटेक्शन मॉडल के संयोजन से पशुओं के गोबर का पता लगाने के लिए कुशल माप पद्धति स्थापित करने का भी प्रयास किया। गोबर से सीएच 4, गोबर से एन 2 ओ, और मूत्र से एन 2 ओ के उत्सर्जन कारकों में अलग-अलग मौसम में अलग-अलग स्थानों पर बड़े अंतर देखे गए। इसलिए, उत्सर्जन कारकों के सटीक अनुमान के लिए तंत्र और मॉडलिंग भविष्य के शोध का विषय है और इस पर और बेहतरी से कम करने की जरूरत है।

कृषि मशीनीकरण के बिना आधुनिक खेती को बढ़ाना असंभव, उपज के अंतराल को भी करता है कम

कृषि मशीनीकरण के बिना आधुनिक खेती की और बढ़ना असंभव सा है। पिछले लम्बे समय से किसानों ने मशीनीकरण को श्रम विस्थापन और मिट्टी संघनन का कारण मानकर इससे दूरी बना रखी थी। हालिया समय में बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन, बेहतर नौकरियों और वेतन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास, दुनिया भर में खान-पान में बदलाव और नीतिगत सद्भावना ने मशीनीकरण को वापस ला दिया है। एचएयू में जारी तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लेने पहुंचे आईआरआरआई दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी से डॉ. राबे याहया ने यह बात सांझा की। उन्होंने कहा कि महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि मशीनीकरण उपज अंतराल को कम करने और नुकसान को खत्म करने के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है। यह जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन और अनुकूलन को बढ़ाते हुए महान और टिकाऊ प्रभाव उत्पन्न करने में योगदान देता है। हालांकि, जैसे-जैसे जलवायु बदल रही है । कृषि मशीनीकरण को स्मार्ट बनाने की तत्काल आवश्यकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	6.12.23	4	4-8

विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार, 5 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

हकृवि में आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आई.पी.सी.सी. नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफैसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरैक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

चौथे सत्र में अमरीका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फ्लो प्रोफैसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकर आधारित कृषि पद्धति विषय रणनीतियां बताई, जिसमें डॉ. मुके जैन ने सह-चेयरमैन की भूमि निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटाबोलि इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरदे चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विष पर अपने व्याख्यान दिए।

अन्य सत्रों में वैज्ञानिकों ने कृ अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृ से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि अ पशुधन, जलवायु परिवर्तन अ पशुधन उत्पादनः प्रभाव अ अनुकूलन रणनीतियां' विषय 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लि उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसा विषय पर, 'औषधीय फसल कोविड-19 के खिलाफ दवा के स्त्रोत के रूप में उपयोग' वि पर, 'वैश्विक पोषण सुरक्षा स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' वि पर अपने व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्द	6.12.23	4	4-7

वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा विषय पर हिसार कृषि विवि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

श्रीअन्न पर वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार, 5 दिसंबर (हप्र)

हिसार में मंगलवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे कृषि वैज्ञानिक। -हप्र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया।

साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	6-12-23	10	4-8

विशेषज्ञों ने वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार, 5 दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. त्रुट्ज ओस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया।

हकृवि में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद देश-विदेशों के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिक।

साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फगिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्सस्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताई, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरूदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए। पांचवे सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चैयरमैन की भूमिका अदा की, जबकि कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्त्र के डॉ. होसम रूशदी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन- प्रभाव और अनुकूलन रणनितियां' विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामक्रिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्त्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	6-12-23	5	1-3

विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य' विषय पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

हिसार(सच कहूँ/मांगे लाल)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा।

जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. ब्रुट्ज ओस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. टाकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6.12.23	4	3-8

एचएयू में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन • तीन दिवसीय सम्मेलन में 15 देशों के करीब 900 वैज्ञानिक और शोधार्थी ले रहे हैं भाग

देश-विदेश से आए विशेषज्ञों ने की 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर चर्चा, शोध पत्र किए प्रस्तुत

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा। इसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. ब्रुट्ज ओस्नाबुरक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। साथ को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

आधुनिक तकनीक किसानों तक पहुंचाने पर फोकस रहा

तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. बीके शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताई, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरूदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर व्याख्यान दिए। पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की

सांस्कृतिक संध्या... विदेशी मेहमानों के सामने हरियाणवी डांस की प्रस्तुति

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे 15 देशों के वैज्ञानिकों और शोधार्थियों के आगमन को लेकर आईजी ऑडिटोरियम में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस मौके पर हरियाणवी डांस प्रस्तुत देते हुए विद्यार्थी।

हिसार | हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे 15 देशों के वैज्ञानिक और शोधार्थी।

'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' पर व्याख्यान दिया

छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्त्र के डॉ. होसम रूशदी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन: प्रभाव और अनुकलन

व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्त्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में

दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	6-12-23	2	6

मिट्टी और जल जीवन के स्त्रोत, मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया तो उर्वरता हो सकती है नष्ट : डॉ. मनोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्लाय में मंगलवार को विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विवि के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी हिस्सा लिया।

इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम में कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है। मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि वास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है, हर फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों-फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए। इस अवसर पर डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. देव राज, डॉ. कृष्ण कुमार भारद्वाज, डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. रामश्वेर सिंह, डॉ. सुशील, डॉ. सोनिया, डॉ. दीपिका, डॉ. उषा, डॉ. हरदीप, डॉ. पंकज, डॉ. सुशील, डॉ. विकास, डॉ. अंकुश, डॉ. सीमा व डॉ. रूही मौजूद रही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	6-12-22	3	5

मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत : डा. मनोज

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मृदा विज्ञान विभाग की तरफ से विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया। मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मनोज कुमार शर्मा ने कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों-फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा दुनिया की तैंतीस प्रतिशत मिट्टी खराब हो चुकी है। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	6-12-23	5	1-2

हकृवि में मनाया विश्व मृदा दिवस

हिसार, 5 दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यमक्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा वास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों/फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा दुनिया की तैंतीस प्रतिशत मिट्टी खराब हो चुकी है। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए। इस अवसर पर डॉ. दिनेश तोमर, डॉ. देव राज, डॉ. कृष्ण कुमार भारद्वाज, डॉ. रोहतास कुमार, डॉ. रामश्वेर सिंह, डॉ. सुशील, डॉ. सोनिया, डॉ. दीपिका, डॉ. उषा, डॉ. हरदीप, डॉ. पंकज, डॉ. सुशील, डॉ. विकास, डॉ. अंकुश, डॉ. सीमा व डॉ. रूही मौजूद रही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	05.12.2023	--	--

विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एम. कुगल ओस्नाबुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. एंटोनियो फरियास ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में पैकेजिंग, सप्लाई चेन तथा खाद्य अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. सेबास्टियन कार्डोना ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. ताकुरो शिनानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईसीसीपी कौंसिल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर बी. डी डेक्कर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व सतत विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मसाला विशेषज्ञ डॉ. वी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर आईसीएआर डॉ. सतीश प्रकाश ने बाजरे की फसल प्रबंधन व डॉ. रामनिवास ने पैकेजिंग उपज के फोल्ड तक पारंपरिक पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर साओ दे. कार्डोसो चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर जानकारियां बताई, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुरेंद्र ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाइड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपना व्याख्यान दिया। पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पोलैंड से डॉ. टाडाओ हॉसलाड ने एंटीऑक्सीडेंट आधारित विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अदा की, जबकि कजाकिस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीन, फसलें और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्र के डॉ. हैसम फराही ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन: प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां' विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. कैलाश खत्री ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संबंधी और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाकिस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आईसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन गुप्ता ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुरक्षा के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, आनुवंशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटियोमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रोफेसर जो रोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	05.12.2023	--	--

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों ने 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य पर प्रस्तुत किए शोध पत्र

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंच पर मौजूद प्रख्यात वैज्ञानिक।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए रणनीति' विषय पर अयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के शोध संस्थानों से आए प्रख्यात वैज्ञानिकों ने वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए बाजरा श्रीअन्न, कृषि-व्यवसाय के लिए कृषि-उद्यमिता और उद्योग संबंध, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, टिकाऊ कृषि के लिए संसाधन प्रबंधन और एकीकृत खेती, फसल उत्पादन में जैविक और अजैविक तनाव प्रबंधन की विधियां, प्राकृतिक व जैविक खेती, कृषि उत्पादन बढ़ाने में सूक्ष्म जीवों का योगदान सहित अनेक विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

पहले सत्र का मुख्य विषय जलवायु परिवर्तन, संरक्षित कृषि, संसाधन प्रबंधन एवं एकीकृत कृषि प्रबंधन रहा, जिसमें जर्मनी से डॉ. डिटर एच. ब्रुदज ओस्नाब्रुक चेयरपर्सन रहे। उन्होंने वैश्विक जलवायु परिवर्तन विषय पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। साथ ही को-चेयरपर्सन ब्राजील से डॉ. फ्रांसिस्को फ्रग्गिओं ने ब्राजील में जोत प्रणाली प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में मॉडलिंग, साइमुलेशन तथा बिग डाटा प्रबंधन विषय पर चेयरमैन मैक्सिको से डॉ. मैक्सवेल मकोंडोवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत चेयरपर्सन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की।

चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जिओ सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर रणनीतियां बताई। पांचवें सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पौलेंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अदा की। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्त्र के डॉ. होसम रूशदी ने की। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. बोचाइब खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कामकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आइसीएआर, नई दिल्ली से आए डॉ. सेन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए श्रीअन्न' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रोफेसर यो तोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपने व्याख्यान दिया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	05.12.2023	--	--

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में देश-विदेश से आए विशेषज्ञों ने वैश्विक खाद्य-पोषण सुरक्षा, स्थिरता और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों के लिए प्रस्तुत किए शोध पत्र

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 5 दिसंबर। फकौडीवा ने कृषि खाद्य प्रणाली में टिकाऊपन के लिए डाटा प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। सह-चेयरमैन जापान से डॉ. ताकूरो शिमानो ने जापान की कृषि पर न्यूक्लियर हादसे के प्रभाव पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में किसानों तक आधुनिक तकनीकों को पहुंचाना विषय के अंतर्गत पेयरपर्कन फ्रांस के आईपीसीसी नोबेल पुरस्कार के सह-विजेता प्रोफेसर आर्थर सी. रिडेकर ने अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर टिकाऊ फसल उत्पादन व समग्र विकास विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि सह-चेयरमैन उदयपुर से आए मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. बी.के. शर्मा रहे। डायरेक्टर अटारी डॉ. परविंदर श्योराण ने धान की पराली प्रबंधन व डॉ. रामसिंह ने मेघालय राज्य के घरेलू स्तर पर खाद्य पदार्थों के सेवन के पैटर्न के बारे में चर्चा की। चौथे सत्र में अमेरिका की टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी के संकाय फेलो प्रोफेसर सर्जियो सी. कापारेडा चेयरमैन की भूमिका निभाते हुए मशीनीकरण आधारित कृषि पद्धति विषय पर तकनीकियां बताई, जिसमें डॉ. मुकेश जैन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। डॉ. सुधि ने मैटाबोलिक इंजीनियरिंग विषय पर व डॉ. गुरुदेव चंद ने हाईड्रोपोनिक फार्मिंग विषय पर अपने व्याख्यान दिए। पांचवे सत्र में फसल उत्पादन में जैविक व अजैविक तनाव प्रबंधन विषय के अंतर्गत पोलैंड से डॉ. टकाओ इशिकावा ने एंजाइमेटिक डाइवर्सिटी विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया व चेयरमैन की भूमिका अदा की, जबकि कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कार्मकिन ने सह-चेयरमैन की भूमिका निभाई। छठे सत्र का विषय 'कृषि अर्थव्यवस्था के लिए कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण जीव, जलकृषि और पशुधन' रहा, जिसकी अध्यक्षता मिस्र के डॉ. होसम बरादी ने की व जलवायु परिवर्तन और पशुधन उत्पादन प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियां' विषय पर व्याख्यान दिया। सातवें सत्र में फ्रांस से डॉ. योगाइय खदरी ने 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए उद्योग संपर्क और कृषि व्यवसाय' विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही सत्र की अध्यक्षता की। कजाखस्तान से डॉ. विक्टर कार्मकिन ने 'औषधीय फसल को कोविड-19 के खिलाफ दवाओं के स्रोत के रूप में उपयोग' विषय पर मुख्य शोध प्रस्तुत किया। आठवें सत्र में आईसीएआर नई दिल्ली से आए डॉ. सैन दास ने 'वैश्विक पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए औजार' विषय पर अध्यक्षता कर अपना व्याख्यान दिया। नौवें सत्र में डेनमार्क से डॉ. अहमद जहूर ने फसल सुधार के लिए पारंपरिक प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, जिनोमिक्स, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स' विषय पर अध्यक्षता करते हुए अपना व्याख्यान दिया। दसवें सत्र में जापान से प्रोफेसर यो तोमा ने 'स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती' विषय पर अपने व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	05.12.2023	--	--

हकृवि में मनाया गया विश्व मृदा दिवस

हिसार (चिराग टाइम्स)

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा वास्तव में मिट्टी जीवों, खनिजों और कार्बनिक

घटकों से बनी एक दुनिया है, जो मनुष्यों और जानवरों के लिए भोजन प्रदान करती है। हमारी तरह, मिट्टी को भी स्वस्थ रहने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों की संतुलित और विविध आपूर्ति की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक फसल के साथ मिट्टी पोषक तत्वों को खो देती है। यदि मिट्टी का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तो उसकी उर्वरता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है और इस मिट्टी में उगने वाले पौधों/फसलों में पोषक तत्वों की कमी होगी। उन्होंने कहा दुनिया की तैंतीस प्रतिशत मिट्टी खराब हो चुकी है। यह दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में पहचानी गई है। कार्यक्रम में डॉ. राजपाल यादव, डॉ. किरण कुमारी, डॉ. राम प्रकाश ने मृदा से जुड़े विषयों पर व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	05.12.2023	--	--

हकृवि में मनाया विश्व मृदा दिवस

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय में आज विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित किसानों व कृषक महिलाओं ने भी भाग लिया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने कार्यमक्रम में बोलते हुए कहा कि मिट्टी और जल जीवन का स्त्रोत है क्योंकि मिट्टी हमारे द्वारा खाए जाने वाले प्रत्येक भोजन, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी, प्रत्येक कोर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी से जुड़ा हुआ है।